B.A. पार्ट-1
NON-HINDI

* वाक्यगत अशुद्धियाँ (वाक्य अशुद्धि शोधन) :-
शेष-भाग

⇒ (9) संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ :-
संज्ञा पद के प्रयोग में प्राय: दो प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं - (i) अनावश्यक संज्ञा शब्दों का प्रयोग।
(ii) अनुपयुक्त संज्ञा शब्दों का प्रयोग।

(i) → अनावश्यक संज्ञा शब्दों का प्रयोग -
अशुद्ध रूप - मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ।
शुद्ध रूप - मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।

(ii) → अनुपयुक्त संज्ञा शब्दों का प्रयोग -
अशुद्ध रूप - रेडियो की उत्पत्ति किसने की।
शुद्ध रूप - रेडियो का आविष्कार किसने किया।

(9) सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ -
हिन्दी में कभी-कभी सर्वनामों के अशुद्ध रूप तथा अनुपयुक्त स्थान प्रयोग भी होते हैं।
→ उदाहरण -
(i) अशुद्ध रूप - मेरे को बाजार जाना है।
शुद्ध रूप - मुझे बाजार जाना है।

अशुद्ध रूप - तेरे को क्या चाहिए ?
(ii) शुद्ध रूप - तुझे क्या चाहिए।

(10) विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ -
विशेषण का प्रयोग विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार किया जाता है। वाक्य में कई बार अनावश्यक, अनियमित व अनुपयुक्त विशेषण का

प्रयोग हो जाता है, जो वाक्य को अशुद्ध कर देते हैं।

→ उदाहरण –

(i) अशुद्ध रूप – यह सबसे सुन्दरतम साड़ी है।
शुद्ध रूप – यह सुन्दरतम साड़ी है।

(ii) अशुद्ध रूप – उनकी आजकल दयनीय दुर्दशा है।
शुद्ध रूप – उनकी आजकल दयनीय हालत है।

(11) क्रिया संबंधी अशुद्धि –
वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग एवं वचन के अनुसार किया जाता है अन्यथा वह वाक्य अशुद्ध समझा जाता है। इस अशुद्धि को वाक्य की क्रिया संबंधी अशुद्धि कहा जाता है।

→ उदाहरण –

(i) अशुद्ध रूप – राम और सीता वन को गई।
शुद्ध रूप – राम और सीता वन को गए।

(ii) अशुद्ध रूप – मेरी बहन दिल्ली से वापस आया है।
शुद्ध रूप – मेरी बहन दिल्ली से वापस आयी है।

(12) क्रियाविशेषण संबंधी अशुद्धियाँ –

(i) अशुद्ध वाक्य – भिखारी को थोड़ा चावल दे दो।
शुद्ध वाक्य – भिखारी को थोड़े चावल दे दो।

(ii) अशुद्ध रूप – राम दिनों-दिन मेहनत करता है।
शुद्ध रूप – राम दिनों-रात मेहनत करता है।

(iii) अशुद्ध रूप – जैसा बोओगे उसी तरह काटोगे।
शुद्ध रूप – जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

(13) कारक संबंधी अशुद्धियाँ :—

वाक्यों में कारक संबंधी गलत प्रयोग भी किए जाते हैं, जिस कारण वाक्य अशुद्ध हो जाता है। इन अशुद्धियों को कारक संबंधी अशुद्धियाँ कहा जाता है।

(I) कर्ता कारक संबंधी अशुद्धि —

भूतकाल में सकर्मक क्रिया होने पर 'ने' चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे —

→ अशुद्ध रूप — मैं सारी पुस्तक पढ़ डाली।
शुद्ध रूप — मैंने सारी पुस्तक पढ़ डाली।

(II) कर्म कारक संबंधी अशुद्धि :—

किसी वाक्य में जब कर्म को अधिक महत्त्व दिया जाता है, तो वहाँ कर्म कारक के चिह्न को का प्रयोग किया जाता है।

जैसे —

→ अशुद्ध रूप — वह लड़का पीटता है।
शुद्ध रूप — वह लड़के को पीटता है।

(III) करण कारक संबंधी अशुद्धि —

→ अशुद्ध रूप — वह बस पर यात्रा कर रहा है।
शुद्ध रूप — वह बस से यात्रा कर रहा है।

(IV) सम्प्रदान संबंधी अशुद्धि :—

संप्रदान कारक के दो चिह्न हैं 'के लिए' और 'को' यदि एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग हो जाता है तो वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

जैसे —

→ अशुद्ध रूप – शिष्य यज्ञ को लकड़ी लाया।
शुद्ध रूप – शिष्य यज्ञ के लिए लकड़ी लाया।

→ अशुद्ध रूप – पंडितजी ने भक्तो के लिए कथा सुनाई।
शुद्ध रूप – पंडित जी ने भक्तों को कथा सुनाई।

(v) अपादान कारक संबंधी अशुद्धि :–
→ अशुद्ध रूप – लड़की झूले पर से गिर गई।
शुद्ध रूप – लड़की झूले से गिर गई।

(vi) संबंध कारक संबंधी अशुद्धि :–
→ अशुद्ध रूप – राधा का और कृष्ण का मंदिर प्रसिद्ध है।
शुद्ध रूप – राधा कृष्ण का मंदिर प्रसिद्ध है।

(vii) अधिकरण कारक संबंधी अशुद्धि :–
→ अशुद्ध रूप – किसान ने खेत पर बीज बोया है।
शुद्ध रूप – किसान ने खेत में बीज बोया है।

→ अशुद्ध रूप – घर पर सब कुशल हैं।
शुद्ध रूप – घर में सब कुशल हैं।